प्रेस नोट – द्वितीय दिवस

दूरदराज़ से आए किसान उठा रहे हैं पूसा कृषि विज्ञान मेला – 2023 का लाभ *'प्रिसिजन फार्मिंग', जलवायु तन्यक एवं संपोषक कृषि* एवं *'कृषि विपणन और निर्यात'* पर तकनीकी सत्र आयोजित

- पहले दिन देश के विभिन्न क्षेत्रों के किसानों ने मेले में भाग लिया और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा विकसित किस्मों और तकनीकों के बारे में जानकारी प्राप्त की, साथ ही सजीव प्रदर्शनी, विभिन्न कृषि मॉडल और किसान सलाहकार सेवाओं का लाभ उठाया। इस मेले के प्रमुख आकर्षण 'श्री अन्न आधारित मूल्य श्रृंखला का विकास', 'स्मार्ट कृषि /संरक्षित खेती', 'जलवायु तन्यक एवं संपोषक कृषि', 'कृषि विपणन और निर्यात', 'किसानों के नवाचार','किसान उत्पादक संगठन' इत्यादि विषयों में वैज्ञानिक कृषक संवाद एवं प्रदर्शनी हैं।
- पूसा कृषि विज्ञान मेले में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थान, कृषि विज्ञान केंद्र और अन्य संस्थाओं के200 से अधिक स्टाल लगे हैं,जिनके माध्यम से उन्नत कृषि तकनीकों का प्रदर्शन किया जा रहा है। मेले में 40 स्टॉल 'कृषि उद्यमशीलता'को बढ़ावा देने के लिए समर्पित हैं।
- मेले का सीधा प्रसारण यूट्यूब चैनल के माध्यम से *(https://www.youtube.com/watch?v=SKmtKAP8yWg)* भी किया जारहा है, ताकि पूरे देश के किसान इस कार्यक्रम को देख सकें, भले ही वे मेले मेंउपस्थित न पाये हों। मेले के दूसरे दिन, तीन तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया जिनमे क्रमश: *'प्रिसिजन फार्मिंग'* के लिए नवोन्मेषी प्रोद्योगिकियाँ, जलवायु तन्यक एवं संपोषक कृषि, कृषि विपणन और निर्यात पर विचार–विमर्श किया गया।
- पहला सत्र "*प्रिसिजन फार्मिंग के लिए नवोन्मेषी प्रोद्योगिकियाँ* " विषय पर आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता भा.कृ.अनु.प. के उप महानिदेशक (प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन) डॉ. एस.के. चौधरी ने की। डॉ. अनिल राय, सहायक महानिदेशक (सूचना प्रोद्योगिकी), भा.कृ.अनु.प. ने सत्र की सह–अध्यक्षता की। डॉ. ए.के. सिंह, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान ने स्वागत भाषण के साथ वक्ताओं का परिचय दिया। इस सत्र में श्री शिवाश्रित प्रधान (ईएसडीएस सॉफ्टवेयर) ने "डिजिटल कृषि" पर वक्तव्य दिया, जिसमें उन्होंने कृषि में उभरती डिजिटल प्रौद्योगिकियों की आवश्यकता और भूमिका पर जोर दिया। श्री राजेश गुप्ता (आईएनवीएएस टेक्नोलोजीस प्राइवेट लिमिटेड) ने "स्मार्ट सिंचाई तकनीकों" पर किसानों से चर्चा की तथा श्री संजीव कश्यप (जनरल एरोनॉटिक्स प्राइवेट लिमिटेड) ने "कृषि ड्रोन" विषय पर विस्तृत जानकारी साझा की। डॉ. मुर्तजा हसन, प्रधान वैज्ञानिक, संरक्षित कृषि प्रोद्योगिकी केंद्र ने किसानों को 'वर्टिकल फार्मिंग' के विषय में बताया। सत्र का समन्वयन डॉ. मनोज खन्ना, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी फ़ोसू, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा किया गया।

- दूसरा सत्र *"जलवायु तन्यक एवं संपोषक कृषि"* विषय पर था, जिसकी अध्यक्षता डॉ. ए. के. सिंह, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, ने की । इस सत्र में डॉ. राजबीर यादव, प्रधान वैज्ञानिक, आनुवंशिकी ने " जलवायु अनुकूल कृषि

प्रौद्योगिकियों" के बारे में जानकारी साझा की। डॉ. पी. ब्रहमानन्द, परियोजना निदेशक, जल प्रोद्योगिकी केंद्र ने “जल संरक्षण एवं सिचाई की उन्नत तकनीकें” विषय पर वक्तव्य दिया। डॉ. आरती भाटिया, प्रधान वैज्ञानिक, पर्यावरण विज्ञान संभाग ने "नत्रजन का प्रभावी उपयोग एवं प्रदूषण प्रबंधन" पर विवरण साझा किया।पुआल के उचित प्रबंधन हेतु सूक्ष्मजीव संभाग के अध्यक्ष डॉ. सुनील पब्बी ने *पूसा डीकंपोजर* तकनीक के बारे में जानकारी दी। डॉ. टी.के. पुरकायस्थ, प्रधान वैज्ञानिक, मृदा विज्ञान और कृषि रसायन संभाग ने "मृदा स्वास्थ्य कार्ड आधारित मृदा पोषण प्रबंधन" पर ज्ञान साझा किया। डॉ. दिनेश कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, सस्य विज्ञान संभाग द्वारा “संपोषक कृषि की तकनीकें” विषय पर जानकारी दी गयी। डॉ. के.के. सिंह, पूर्व अध्यक्ष, भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, ने "जलवायु मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवा” के बारे में बताया। पदमश्री डॉ. वीपी सिंह, सेवानिवृत्त प्रमुख (आनुवांशिकी विभाग), भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली भी इस अवसर पर उपस्थित थे। डॉ. राज कुमार गुप्ता (पूर्व में CIMMYT और बोरलॉग इंस्टीट्यूट फॉर साउथ एशिया) ने संसाधन-संरक्षण प्रौद्योगिकियों के प्रसार के बारे में जानकारी दी। सत्र का समन्वयन डॉ. टी. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा किया गया।

- तीसरा सत्र *"कृषि विपणन और निर्यात"* पर आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता एपीडा के निदेशक डॉ. तरुण बजाज ने की। इस सत्र में डॉ. तरुण बजाज (निदेशक एपीडा), श्री नदीम सिद्दीकी, श्री विपिन गुप्ता (चेयरमेन, अलका मिल्क फूड्स), पद्म श्री अवार्डी किसान श्री सुल्तान सिंह (सुल्तान मछली बीज फार्म) द्वारा क्रमश: श्री अन्न के निर्यात की संभावनाएं, आम का निर्यात, डेयरी उत्पादों का निर्यात एवं मछली व्यवसाय एवं निर्यात के अवसरों जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी साझा की गई। इस सत्र का समन्वयन डॉ. अल्का सिंह, प्राध्यापक, कृषि अर्थशास्त्र द्वारा किया गया।

- सभी तकनीकी सत्रों के अंत में किसानों-वैज्ञानिकों के बीच वार्ता हुई और अधिकांश किसानों ने नवीन तकनीकी ज्ञान, सब्सिडी और सरकारी योजनाओं के बारे में प्रश्न पूछे।

- मेले में किसानों को बासमती चावल की झुलसा एवं झोंका रोग रोधी तीन किस्में पूसा बासमती 1847, पूसा बासमती 1885, पूसा बासमती 1886 का बीज भी वितरित किया जा रहा है तांकी वे इन नवीन क़िस्मों का बीज निर्माण स्वयं भी कर सकें। नई फसल किस्मों के लाइव प्रदर्शन, सब्जियों और फूलों की संरक्षित खेती के प्रदर्शन और भा.कृ.अनु.प. के संस्थानों तथा निजी कंपनियों द्वारा विकसित कृषि उपकरणों की प्रदर्शनी और बिक्री पर अपनी रुचि दिखाई।

- तकनीकी सत्रों के पश्चात किसानों के मनोरंजन हेतु प्रसार भारती के द्वारा लोक संगीत संध्या का आयोजन किया गया।